

शृंगार सहित श्रीगुरुजी शय्यापर विराजे गुसाई मालक तथा नहकै  
 भेट करे तो पीछे शृंगार बजे होइ श्रीगुसाई जी नारी चौकी पै विराज के  
 डोल चिनारीके बीचके द्वारमें चौकी रहे शृंगार गादीको फांदनाको बडे  
 होइ जोड बजे होइ कुलहको शृंगार रहे कुंडल वसर श्रीहस्तके पुल  
 हत सादल मारिका रहे श्रीवस्त्रमें कज भरण लड हांस कटल त्रिवल  
 हीराको ताइत चौकी रहे दाद घाटिका रहे घाटिका बजे होइ जोडी  
 की माला हरी मणोनकी धरे नागा रहे ओदनो ओद शय्याके चोरसा  
 उठे ओदनो शय्याप पाइतकी आजे श्रीगुरुजी विराजे दंडवत  
 करे श्रीगुरुजीके पागेके गादीके शय्याके आगे तकिबासुलगा-  
 यके धरे बीचमें चौपड मडे आस पास ४ तकिबा रहे गादीके जोड  
 नी धरे माला पास धरे बीज नित्यके तथा उत्सवके २० सिचोलीमें  
 धरे वरासको प्याला फूल दान धरे अरगजाकी वरनी गुलाबजल-  
 की सीसी आवखास कुंजा श्रीजमुनाजलके जरीके कागा वरन्न बडेवख  
 नये भये होइ तिनकु अतर समपीके पास धरे चुनने नही शय्या  
 के नीचे आभरणके कलमदान जागेके त्रिघो तामे भेटके रूपे वा  
 रहे आने

### Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

शय्याको साज शय्याके पास रहे झारी नित्यको वल मिगईथार  
 दूध घरकी सामथी केशरी पेडा १ वरपी वासोधी गुंजिया और श्वेत  
 गै पेडा वरपी वासोधी गुंजिया दूध पुरी मलाई मीवे दही माखनमि-  
 थ्रा हांडी दूधकी

अनसंखडोंमें बीजके लडुवा बंदीके लडुवा शिखरनवजे नालनी  
 सब तरहकी कदली फलादिक लेने मिरन कुरा उत्सवके सधाना सांग  
 नही एक थारी गुलाब पाककी तिलकी रोये साबो नोकी रेवडीकी दही  
 दाकी सठेलेकी तिनगुनीकी पापी वदाम इलाइची दाना पगे पेदा  
 पाक रंग मेवा एक थारमें हेलनकी रस सोरा मेवा सब तरहके  
 वदाम मिथीकी उली दारम दुहारा मीरी

भोग अनुसार जलकी चपटी या १ वा २ में रूपेकी कयेरी धरे  
 अन्नकूटके दिन मंगल आरतो भये पीछे शृंगार बजे होइके स्नान  
 होइ शृंगार दिवारीको श्रीमस्तकपै कुलहको पान हीराको गोकपी

धरें प्राचीन हमेल फाँदनाकी तथा गादीकी नही धरें ताडतनकी हमे  
ह धरें कमल पत्र सवारें चैणु हीराकी नेत्र जज्जु गोपीवल्लभमे जा  
खो पाटिया मीये शाक उत्सवको संधाना पुलनामे वदाममित्रीकी  
डेही सेव.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

राज भोगमे हांडी नही दुधको कवरा गोपालवल्लभमे धासके  
लडुना चोरको खोर दनी मित्यसु कडाको छछका चपटिया उल  
वको संधाना छडियलदर तीन कुडी पापड तिलवडी ढकरो कवरी  
सानकी शारी वडी के शाक उत्सवमे चालनी वदाममित्रीकी कवरी  
रुजभोग आरती होइ गोवर्द्धन पूजाक पधारें चोडेलमे विराजके  
घास छोटै गकुरजी विराजे श्रीगिरिराजजी विराजे छोटै पीतांबर  
बिछाडके वरासकी वंदी धरें श्रीगकुरजीके वाम ओर जोदनी पे  
गाथ खिलोवेका पीतांबर दोहरो करके धरें जेवना ओर नेत्र धरें  
संगचले कीर्तनिया समाज सहित आगेक गुल्ल अवीरकी चालनी  
मडती जाय श्रीजमुनाजलको शरी १ त्रिधे पंखा मुग छंगीर  
वीडी आरोगे पधारें वीडो आरोग चुके हांडी आरोगे हांडी  
आरोग चुके वीडो आरोग श्रीगिरिराजक पधारें पीतांबर विष्ण  
यके तिलक अक्षत तुलसी समपे आचमन प्राणायाम संकल्प  
आचमनके भावसु कानक हात लगावे गंगा विष्णु हरिः कहके  
संकल्प ॐ विष्णु विष्णु विष्णुरित्यादि अमुकसंवत्सरे दक्षिणायने  
शरद्व्रद्धती कार्तिक मासे शुक्लपक्ष प्रतिपदि शुभतिथी शुभवासरे  
शुभवक्षेत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुणविशेषण विरिथिया  
श्रीमन्नन्द राज कुमारस्वाभ्युदयार्थ गोवर्द्धनपूजन सह करिष्ये  
गोवर्द्धन पूजा होइ प्रथम स्नानसंग्रहसु स्नान शंखसु करावे  
फेर दुधसु श्रीसु ताम्रपेटे अरुगजसु जपसु अथवा हरी  
छांटके कंकु छांटै कुंड तापो भोग आवा तुलसी शंखोदक धूपदे  
प होइ गोवर्द्धन पूजा होइ चुके छ वीडो आधी रहे चोडेल  
पधारें रस्तामे वीडो आरोग चुके चोडेल पर फूलनका वृष्टि हो  
इ निज मंदिरके आगे चोडेल धरें आरती चुनके हीवलाकी कंकु  
के अष्टदलकी उतरे चोडेल सु उतरके श्रीगकुरजी सिंहासन पर

विराजे माला पहरे शीतल भोग धरे शारी जमुनाजलकी भरे शीतल भोग सरे अनसखजी भोग आवे

सामग्री बुरी छुये सकरपारा फेणी श्वेत फेणी केसरी वावर श्वेत वावर केसरी मेण्डी गुंडा करवे लडुवा सेवे लडुवा मंगोहरके सरमज जलेबी मोगये इंदरसा कूपर नाजे रवेर चोखाकी संजा

बकी सेनकी मणकाकी सुहारो देऊ खांडको सीरा खली मालपुवा पुना गुदडीया मि सरन वजी विलसा ल केलाकी विलसा ल करो राको मीमे शाक पखस मीमे शाक फुटको चकुली सव

दूधयरकी सामग्री दूधकी हांजे दूध पूरी मलाई पेडा केसरी तथा श्वेत वरकी केवारी तथा श्वेत गुंशिया केसरी तथा श्वेत खंडेमी ठे दही भासनमिश्री

सधानके कुंड ना चपटीया केरीको सधाना नीबुको सधाना आरा को सधाना टेंवीको सधाना उत्सवको सधानाको कुंड लोपको कुंड मिरचकी कुंडेली वृषकी कुंडेली कदली फलादिक भासनको कुंड मिश्रीको कुंड चपटीया चपटीया १ वा १ न २ स सडीमे पांचो भाव सेन बुली चपा भाव भाव मूंगदार चपाकी वृजरी मूंगकी उडरकी कवी तीव कुंड पापड कचरिया सव तरहकी तिलवडी देवरी मिरचफल शाक भुजेना कदके तथा कदतु अनुसार भाजी शाक सव तरहके होय उरवा होय वडा होय मंगोज होय खीके रोइ शाक पख वडाकी मुमोजकी सेनकी बुरीकी सयता केबाको मोल्हाको बुरीको फुटको

॥ कार्तिक सुद ३ ॥

भाई दुज (अभंग) होइ श्रीमसापको वाग उलजरीको ओटनी श्री महा प्रभुजीको हल चरीकी ओटनी श्रीमस्वर पर छप्पेदार चीरा हरी जोडी शृंगार हलको चंद्रिका सादा

श्री गोपीबल्लभमें खिचडी चोखा मूंगकी आरोगे आदाअर उसातीन कुंडा पापड मिरच फल कचरिया नकी थारी छेके शाक २ अनसरवडीमें मीमे शाक गुडकी कवेरी पलनामें उत्सववत् नदाम मिश्री

राज भोगके समय धार सानके आगेके त्रमचा धरके आरती प्रगवी  
जाय झालर चंय शंखनाद कीवन होय दंडवत करके विलक करे  
अधत चेटे बीजा २ छोटे गुरुरजीकुं तिलक करे श्रीमहा प्रभुजीकुं  
नहीं मटिया वरके आरती उतारे नोखावर करे  
संखजीमे छडी बलदार पकोडीकी कडी तिलवडी देवरी रूपरीया  
दही भात पापड मीगे शाक आधा पाटिया वडके साक २  
अन संखवीमे हांडी मलडा दूधके गोपालवल्लभमे मंगहरके लडुगा  
उत्सवको (सध्या संध्या) स्नान कडकी छछके उपरा गुडकी  
कवरी

अन्नकूट और भाईदूजके बीचमें साली दिन होय तो रूपहरी  
जरीके वस्त्र गोल चौरा जोडी हरी वा लाल गोपालवल्लभमे दहीकी  
सेवके लडुवा छडी बलदार पकोडीकी कडी पापड

॥ कार्तिक सुद ८ ॥

गोपाष्टमीकुं शृंगार रेशमी लाल छापाको वागा ओदनो लाल  
जरीकी तापे लाल दरिआइ तो मीठांवर ओठे हीरकी मुकुट हीरकी  
जोडी शृंगार दुहरो माला हार सब तरहके उत्सवके वथा नित्यके  
रुलीको हार वल्लुभी जुहीके कस्तुरीकी माला वैष्णु हीरकी वेत्र  
जडांऊ गेंद चौगान सोनेको वाघवकरी सोनेके चोयी नहीं धरे।  
गोपीवल्लभमे भातकी धार छछि बलदार पकोडीकी कडी पापड  
मिरनको साक खेके शाक मीगे शाक उत्सवको सध्या  
पलनामे नित्यवत्

राज भोगमे आधा पाटिया मीगे शाक दही भात हांडी मलडा  
दूधके गोपालवल्लभमे मंगहरके लडुगा  
संध्या आरती पीछे लाल कुलह धरे पीतावर कजो होइ विना  
झालरकी ओदनो ओठे

॥ कार्तिक सुद ९ ॥

अक्षय नौमीकुं अन्नकूटको शृंगार होइ पलनाके समय पलना  
बीचमे राखे श्रीगुरुरजी पलनामे विराजे छोटे गुरुरजी श्रीमहा

प्रभुजीके पास विराजे पलना सुलायके परिक्रमा करे  
राजभोगमें तूअरकी दर प्रभुजीकी कदी गोपालवल्लभमें वृद्धी  
लेहुवा आरोगे।

॥ कार्तिक सुद १० ॥

दसमकं खल जरीके वस्त्र चीरा छज्जेदार वागा गोल जोजे सुनह-  
राकी सुगार हलकी

Core Mata Mandir - Pracheen Kram 2

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥ कार्तिक सुद ११ तथा १२ ॥

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushtimeriya Research Portal)

देव प्रबोधनी उत्थापन एकादशी तथा द्वादशीके दोऊ दिना मंगलभा-  
गसुं अने सरके नय ताई वृद्धी खलवा आरोगे शय्या मंदिरमें तहाकि  
छै। सालकी सुपेती विछाई नेकी नई जोदेवेकी सुपेती खीर सागरकी  
साझ सनेरकं शय्या पै चादर तहो विछावे वालस्तके वस्त्र नही गिर-  
दाकी खोली नही साझकं चादर नही साठे नई सुपेतीके ऊपर पहले  
दिना चादर नही विछावे, कसना आवा पलंगपोस चोरसा उत्सनेके  
चंदुवा पिछवाइ मुदाके टकना जरीके रजाई ओढे तापर लाल ज-  
रीकी खोल ओढे वदन वार जरीकी काचकी पल्लुवकी बंधे शीत-  
कालको बंध पुरानी सालकी २ सुपेती जबसुं शीत पडे तसुं जि-  
छै प्रबोधनीके तीन सुपेती विछे आरती धारोकी होइ अभंग  
श्री गुरुरजीके होइ उवटना नही, वस्त्र मुदाके शीत कालके खलमं  
टनकी सुथन कवाष गद्दड ओढेवेकी रजाई खल सादनकी देकरामे  
सुथन गद्दड कनाय छेठे बडे दोऊ चरहके श्री महाप्रभुजीकी रजाई  
शय्या मंदिरमें धर राखे जागते समय पुरानो गद्दड ओढे वा नयो  
ओढे विराजवेकी गादी प्राणीन ताही पर सालकी गूडडी विछे खो-  
ली नही दोर सके दिन खोली चढे प्रबोधनीसुं माघ सुद ४ ताई  
गादी पर गूडडी विछे तह कुज सकादशी ताई रहे सिलासन पर ज-  
डाल तकिना लवी गादी जाट बोरोकी खोली दालघेरी की

Shri Jati Maharaj Ki Pusht

Sansthan

Shamali Gopinathi Maharaj

Core Mata

प्रबोधनीसुं रामनौमाकी दसमी ताई पापड विलवडी देवरी  
एक कनरिया राजभोगमें नित्य आवे शयनमें गोपीवल्लभमें पापड  
नित्य आवे देव सवेर उठे तो राजभोगमें वेगनके साल भुजेन

सकरकंदको शाक भुजेना आरोगे गुडकी क्येरी आरोगे सांखको  
 रस सडेलो उत्थापनमें आरोगे सांशक देव उठे तो रायनमें वेगन  
 को शाक आरोगे सांशक देव उठे तो द्वादसीके दिनसं राज भोगमें गु-  
 डकी क्येरी आरोगे जोल ताई द्वादसीके दिनसं उत्थापनमें सांखको  
 रस सडेले जोल ताई आरोगे राज भोगमें नित्य गुडकी क्येरी आरोगे  
 प्रबोधनीसु जा एकादशीको राती आरोगे गोपीवल्लभमें तब रोवैकेसंग  
 गुडकी क्येरी आरोगे

Core Mata Mandir - Pracheen Kram 2  
 www.vallabhacharya-agraharaj.org  
 www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushchimargiya Research Portal)

प्रबोधनीकु वस्त्र फरुखशाही जरीके श्रीमहाश्रुजीके तथा श्रीब्रह्म-  
 जीके वागा मुकुट वस्त्र रुईके श्याम, तेरससु रुईको वागा साठे सा-  
 साके वागासु रुईके वागा पर जरीको वागा फुल गुर श्रीमस्तरुपरकु-  
 लहजरीकी शृंगार कमल पत्र आभरण छेये बडे जन्माष्टमीवत् श्री-  
 गुसाईजीके उत्सवकु प्रबोधनीकु जोहरि पहरे छेये उत्सवकु गु-  
 जरी पहरे हलके शृंगारमें वा भारीके शृंगारमें नित्य नूपुर पहरे  
 प्रबोधनीसु माघ सुद ४ ताई चोयी नहीं, अंजन नहीं, हमेल फोदना-  
 की गादीकी स्तंभ, पोदाग पै वाइतकी हमेल इच्छा होइ तो धरे जो-  
 डी हीराकी और आभरण जन्माष्टमीवत् चोयी शीत कालमें नहीं धरे,  
 गोपीवल्लभमें आरोगे पाटिया मीवे शाक उत्सवको सधाना  
 पलनामें बदाम मिश्रीकी डेली सेव.

Shri. Poddagi P. Vasudevji Maharaj Prasthan

राज भोगमें तीन कूज छडीवल दार मीगे शाक पापड तिलवडी देवरी  
 कनरिषानकी थारी.

गोपालवल्लभमें लालाजीके अन्नकूटकी सामग्री मिल आरोगे उत्स-  
 वके सधाना खीर दूनी कडाकी खलकी चपलीया हांडी नहीं दूधको  
 क्येरा आरोगे शाक भुजेना सब तरहके आरोगे  
 देव सवेरकु उठे तो पलना झलके मंडपमें पधार सांशक उठे  
 तो ग्वाल होइ उवशा सर पीछे मिडपमें पधार

Sansthan  
 Shrinad Gokulnathji Maharaj  
 Mata Mandir

सवेरकु देव उठे तो आगळे दिन अनोसर भये कोडी मांडे सांशक भोग  
 उठे तो राज भोग आरती पीछे कोडी मांडे तिनारीमें  
 मंडपके पास खवडाये नीर शकरकंद सांखके इक चगा दूसरे ओवे

पहला

प्रबोधिनीकं देवोत्थापनं होय के पंचामृत होय फिर गद्दु वागा  
ओलके फिर तिलक होय

छवडासुं ठांरु के धरे घृतके १६ दीवा कीचके द्वारमें तिवारीमें चौकमें  
तिवारीसुं नीचे दोइ अंगीमें धरे तिवारीके कोनामें शीतकालको दोकराधरे  
श्री गुरुजी मंडपमें चौकी पै विराजे श्रीबालकृष्णजी श्रीमदनमोहनजी  
गादीसुं लगेके विराजे पीछे के श्रीमहा प्रभुजी विराजे शालर बया  
शंखचाद होइ देव उठे दरसन सुले कीतेन हाथ चौकीसाहित श्री  
गुरुजीके उगवे श्लोक ३ बार पढ़े उन्निधोतिष्ठ गाविन्द त्यज  
निद्रां जगत्पते । त्वया चोत्थीयमानेन उल्लिखित भुवनत्रयम् ॥१॥ त्वयि  
सुप्ते जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । उल्लिखितं चेष्टते सर्वमुन्निधोतिष्ठ  
माधव ॥२॥ छोटे गुरुजीके स्नानके चक्रला पै कंकुको अष्टदल  
मांडके पधराके तिलक करे अक्षत चोटे तुलसी वरणारविन्दमें पंचा-  
मृतमें शंखमें समर्पे कानके हाथ लगाय प्राणायाम करके कंकु अ-  
क्षत लेके संकल्प ॐ विष्णु विष्णु विष्णु रित्यादि दक्षिणायने सरदती  
कार्तिकमासे शुक्लपक्षे अथ हरि प्रबोधिन्वेकादश्यां शुभकारे शुभनक्ष-  
त्रे शुभयोगे शुभकरणे एव शुभदिशि वृषण विप्रिधया शुभतिथौ श्री-  
भगवतः पुरषोत्तमस्य देवोत्थापनाद् भूतं पञ्चामृतस्नानमहं करि-  
ष्ये १ श्रीवामनजीवत् पंचामृत स्नान स्नान होइ चुके अंगरेअ  
वागा जोडी पहरावे गोदके गुरुजीके पीतांबर उढाके श्रीगुरुजी  
के तिलक अक्षत तुलसी समर्पे गोदके गुरुजीके माला पहरावे  
श्रीगुरुजीके गद्दु उढावे श्रीमहा प्रभुजीके रजाई उढावे टेराखेके  
भोग आवे बूंदी जलेबौकी थार मिश्रीको पना सांठेको रस सिंगोडा  
वफेणाके रताळू दूधकी हांडी मीये शाक फलारको सब आवे  
शाक भुजेना रायवा कदली फलादिक उत्सवको सधाना सेधो लेन  
मिरच कुरा चालनी सबतरहकी  
भोग औषतुके तुलसी शंखदक धूपदीप होइ टेरा खेके मंडपके  
पाससुं छवडा लेनो जलको कसेज लेनो तिलककी तककी शंख  
धूप दीप चंदा ४ वातीकी आरती लेके तुलसीपूजनकू वीकाइत  
पुकारे

नित्य आवे करके संकल्प ॐ विष्णु ३ रित्यादि पूर्ववत् एवं

गुण विशेषण विशेषण श्रुतिथौ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य तुल-  
 स्या समर्पणं कर्तुं तदङ्गत्वेन तुलस्याधिवासनमहं करिष्ये। जलके  
 कसेजसु अरघ देइ ककु अक्षव छवज भोग धरे तुलसी राखो  
 दक धूप दीप आरती होइ

तुलसीपूजन कर चुके समय होय भोग सरे आचमन मुखवर  
 वीडा दोइ धरे दरसन खुले थारीकी आरती सोनेके दीपलाकी होइ  
 प्रसा करे साझके देव उठे होइ तो शयन भोग आवे सवेरकु  
 होइ तो राज भोग आवे राक भुजेना थारमे अनसरखीके  
 जा आवखोरा जडाऊ

शुकु अधयजी दिनसु शंखनाद होइ उत्थापन भोगमे चालनी  
 मतरहकी

ध्या आरती पीछे शृंगार बजे नहीं होइ गवाल भोग होइ  
 शयन भोगमे छडीयलदार पापड ४ वजकी छछ तिवारीमे कैल  
 को मंडपबंधे झाड रोशनाई गिलास काचके धरे चौरमे हांडी झाड  
 काचके बंधे शयन भोग सरे माला पहरे सकस्वरूप दर्शन खुले  
 शयनके जागरनके झाड परकावज बाजे कीतेन होइ पाट चोकोले  
 गे गेदचोगान धरे चौपड मधी रहै अनोसरको साज दुपहरके  
 अनोसरखवु सिंहासनकी शारी श्रीगकुरजीकी श्रीबालकृष्णजीकी  
 श्रीमहाप्रभुजीकी शारी सनु भरे कुंजा आवखोरा भरे शयनके  
 वीडा जडाऊ बंधे धरे शयन आरती होय शय्याको पेज लगे दर्श  
 न होयके करे समय होय तक जागरणके भोग आवे तब पाटचोकी  
 सरकावे भोग सरे पाटचोकी लगावे गेदचोगान त्रिधी धरे सिंखो-  
 नाकी तबकडी रहै जागरनके प्रथम भोग आवे ताकी याद बूंदी  
 जले बीकी थार मलाइ उत्साके सधाना कदली पलादिक सांग लेन  
 मिरच वूरा चालनी सक वरहकी प्रबोधिनीके जागरणके भोगमे धूपदीप  
 ४ समय होय भोग सरे आचमन मुखवर वीडा २ धरे माला पहरे  
 श्रीगकुरजी श्रीबालकृष्णजी पहरे दर्शन खुले आरती होइ पहली  
 समय होय शारी श्रीगकुरजीकी भरे टैरा सेवे भोग दूसरे आवे

पहले भोग वत् समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीज ४  
 धरे माला पहरे दरौन खुले दूसरी आरती होय समय होय झारो  
 भरे तीसरे भोग आवे पहले भोग वत् समय होय भोग सरे वीज ८  
 धरे माला पहरे दरौन खुले आरती होइ सवा प्रहर रात्रि रहै टेरा  
 खेचै श्री गिरि धर जीको उत्सव मंगल भोग आवे थार वंदो जले वीकी  
 मंगलई मारवन करा सधाना दधको उवरा दहीको उवरीया झारीश्री  
 जमुना जलकी भरे शय्याको साज उठ श्री बाल कृष्ण जीकी श्री महा प्रभु  
 जीकी झारी उठ शय्याप हात परे ते शय्या उठे नही शय्या मदि  
 रमे सोहनी मदिर वस्त्र नही समय होय मंगल भोग सरे आचमन  
 मुखवस्त्र वीज २ धरे दरौन खुले मंगल आरती धारीकी सोनके  
 दीवलाकी होइ टेरा खेचै जागरनके समयकी माला श्री गुरु जीकी  
 बडी करे शृंगारकी माला पहरे टेरा खुले कीवीन गावे गिरि धर लाल  
 बने रंग भीने आरसी बडी दिखावे टेरा खेचै गोपी क्लृभ भोग आवे  
 आरवो पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना पूजीकी थार क्येरी  
 ये नित्यवत् श्री बाल कृष्ण जीकी श्री महा प्रभु जीकी माला बडी करे  
 श्री महा प्रभु जीको अक्षय्य होय फुलल आवला उवटना चदनसु नोता  
 अतर समर्पे आभरण गुंजा पहरे रजाई ओढे तापे केरारी जेरिआ  
 की ओढनी उयके राजभोग तयार होय तो उवरा आवे माल नही  
 होय राजभोगमें डील होइ तो माल होइ पलना झुले बदाम मिश्री  
 की उेली सेव उत्थापनमें राजभोगमें चालनी आवे सूकी मेवा बदाम  
 मिश्री दारु छुहारा गिरी आवे.

राजभोग आवे श्री महा प्रभु जी भोग मंदिरमें विराजे तहां तथा निज  
 मंदिरमें विराजे तहां दरदीको मोव <sup>के पथराकने</sup> पूरे तहां विठे नही श्री महा प्रभु  
 जीको निज मंदिरमें श्री महा प्रभु जीको मुख रजाई सुं वा सुपेती सुं ओढे  
 रहे प्रबोधनी सुं माघ सुद ४ ताई वसंत पंचमी सुं जे ल ताई उपरना  
 सुं श्री मुख ओढे रहे श्री गिरि धर जीके उत्सवके दिन श्री गुसाई जी  
 के उत्सवके दिन श्री मुख खुल्यो रहे श्री महा प्रभु जीको  
 मंगल जीके नीचे

राजभोगमें छडियलुहार तीन कूडा कचरीयानकी थारी पापडतिलक  
वडी देवरी मिरच फूल वडीके शाक २ पांचो भात भीगे शाक.

अन सरखीमें गोपालकलु भमें जलेबी उत्सवको सधाना खीर दूनी  
शिखरन वडी पलनाको भोग कडाकी छछकी चपटीया राभता शाक  
भुजेना सब तरहके

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

www.vallabhacharya-agraahara.org

www.vallabhacharyakropas.org

(Pushpitnarya Research Portal)

हाडी मलज दूधके पेडा दूधकी बसोदी श्वेत बरपी बसोदीके  
दरी मलाई सड़े मीठे दही देणेके दही कदली फलादिक चालनी  
सब तरहकी मिरच वरा लेन

श्रीमहा प्रभुजीके भोग सरखी आवे भातको थार छडीवलहारमुग  
तीन कूडा पापड कचरीया तिलकडी देवरी मिरचफूल वडीके शाकभु-  
जेना राभता सरखीके अन सरखीके सब पांचो भात रोये-लीये नहीं.  
दूधघरको साज सब दूधको मलज मारनाने श्री मलाई मगकी हांडी  
मेवा उमिठाईकी थार गुठकी कयेरी कदली फलादिक लेन मिरच  
वरा नीव आदा पाचरी उत्सवको सधाना

Shri Taji Maharaj Ki Pustak

अन सरखीमें बंदी जलेबीके टोकरा शिखरनवडी खीर भीगे शाक  
मैदाकी पुरी केरीको मुरब्बा नारंगीको पना कडाकी छछकी हांडी  
समथ होय भोग सरें श्रीमहा प्रभुजीके आचमन मुखवअ वीड ४  
पलंगडीके खुटपे अगाडीके दो दो श्रीगुरुजीके आचमन मुखवअ  
वीडी आरोगे माला पहरे <sup>(७)</sup> वीड वाम ओर उत्सवके तकि याके पास  
धरे दर्शन खुले <sup>सब हा न मरे</sup> आरसी देखें श्रीगुरुजीके तिलक होइ अक्षतने-  
टे वीड दोइ धरे तिलकके पाट चौकी लगावें गंद चौगान सोनेके  
धरे त्रिधी धरे मुठिया वारके चुनके हीवलाकी श्रीगुरुजीके आरती  
उतारें टीपना वचें श्रीमहा प्रभुजीके तिलक करे अक्षतने वीड वीड  
तिलकके ४ धरे मुठिया वारके आरती उतारें नौखर पटका रूपे  
या होइ आरतीकी थारी न्यारी नहिये श्रीगुरुजीके होइ सोई होइ  
नौखर श्रीगुरुजीके होय आरसी देखें माला बडी होइ श्रीमहा प्र-  
भुजीकी माला रहे उत्थापन समथ बडी होइ.

संध्या आरती पीछे शृंगार बडो होय कुलह रहे कुलह पर

हरयो ताइत श्रीकंठमें वोकी शयनमें छडीयलदार वजकी छछ.

उत्सव भेलो होइतो प्रबो धनीके दिना गोपीवल्लभ भोग आवे पीछे श्रीमहा प्रभुजी कूं अभ्यंग होइ केशरी डोरि आकी ओदनी ओदें आभरण पहें राज भोगमें श्रीमहा प्रभुजी कूं भोग आवें सरखडी अनसरखडी दूधघरकी पांचो भात आरोगे श्रीगकुरजीके पांचो भात गोपीवल्लभमें राजभोगमें प्रबो धनीके उत्सवको नेग आरोगे दूसरे दिना श्रीगिरि धरजीके उत्सवको नेग सरखडी अनसरखडी दूधकी हाडी मलजा उत्सवको सधाना पांचो भात दूधघरकी सामग्री श्रीमहा प्रभुजीको भोग नहीं श्रीमहा प्रभुजी कूं अभ्यंग नहीं श्रीगकुरजीको शृंगार रह्यो आवे उत्सव न्यारो होय तो तेरसकेदिना छडियलदार डुवकीकी वडी आरोगे शृंगार वस्त्र उत्सवके लाल छज्जेदार चीरा ता पै हीराको सेहरा हीराकी जोडी शृंगार दुहरो उत्सवको देव उठे पीछे

॥ कार्तिक सुद १३ ॥

पहली तेरसकूं वेंगन आरोगे और तेरसकूं वेंगन नहीं आरोगे वेंगन देव उठे तवसु अषाढ सुद १० ताई आरोगे देव शयनी एकादशीसुबंद

॥ कार्तिक सुद १४ ॥

के दिन श्री गोविंदजी महाराजको उत्सव ता दिन श्रीविठ्ठलरायजीके उत्सववत् आरोगे सरखडीमें अनसरखडीमें दूधघरमें वस्त्र पीरी श्रीमखापके माणिककी जोडी कुलह जोड कामको शृंगार इक हरो

॥ कार्तिक सुद १५ ॥

के दिन श्वेत जरीके वस्त्र श्रीमस्तकपै हीराको मुकुट विना पंखाको फुलगर ओदें ठोडे स्वरूप मोजा पहरें वागा पहरें शीत नहीं होय तो प्रबो धनी कूं फुलगर नहीं ओदें होय तो पंखा सहित मुकुट धरे ओदनी ओदें ठोडे स्वरूप कंठकरन धरे काछनी धरे

॥ मग सरवद १ ॥

मग सरवद १ सु माघ सुद ७ ताई गोपालवल्लभ नित्य आरोगे आज सु धनु मीस गिणे ता दिन सु माघ एक ताई गोपालवल्लभमें जो

सामग्री अरोगे सो सामग्री आखे दिनके नेगमे दूसरे दिन मंगल भोगमे शृंगार भोगमे अरोगे.

शृंगार वरुन लाल कारचोवके हरी जोडी श्रीमस्तक पर वेपा दीतवार मंगलवार न होइ तो गोपी वल्लभमे चोरवा मूगकी खीचडी उरवाक चरिया आरोगे उरवा न होय तो कढी आरोगे श्री रामो दरजी महाराजकी आज्ञासु

आज गोपाल वल्लभमे मनो हरके लुडवा आरोगे दारमे खिचडीमे कोल्हाके शाकमे वेगनके शाकमे आदा पडे डोल ताई एकमसु शीत कालकी सामग्री सरखडीकी क्रमसु नित्य आरोगे दीतवारकुं मंगल वारकुं एकादशीकुं द्वादशीकुं मावसकुं उत्सवकुं पूनमकुं खिचडी नहीं आरोगे.

वेगन भात लोंग भात वडी भात दीतवारकुं मंगल वारकुं पूनमकुं आरोगे उत्सवकुं द्वादसी कुं नहीं उडदकी दार लोंगकी खीचडी २ प्रकारकी आदाकी खीचडी २ प्रकारकी गुडकी खीचडी दीतवार मंगलवार मावसकुं आरोगे उत्सवकुं नहीं शीतकालमे मगसर वद १ सुमा घसुदी १४ ताई खिचडी अरोगे फिरती चार विरियां आखे मूग चार विरियां चनाकी दारकी खिचडी आरोगे चार विरियां मूगकी छडि यल दारकी खिचडी आरोगे चार विरियां तुअरकी दारकी चार विरियां वेगन भात मिरचकी कढी चार विरियां लोंग भात मिरचकी कढी मगसर सुदी १५ कुं लोंग भात पानकी कढी आरोगे लोंग भात २ विरियां आखे लोंगके २ विरियां बुकनीको ४ विरियां कडी भात वडीकी कढी नये चना आये तो ४ विरियां चणा भात मिरचकी कढी आरोगे.

Sansthan

गोपी वल्लभमे खिचडी होइ वा लोंग भात वा वडी भात वा चना भात वा वेगन भात होइ तव भात श्वेत दार नहीं राज भोगमे दार आरोगे पापड कच रिया नकी थारी गोपी वल्लभमे राज भोगमे नित्य एक कची या तिलवडी रामनौमीकी दसमी ताई आरोगे प्रबोधिनीसु गोपी वल्लभमे भात दार आरोगे ता दिन कचरियाकी थारी नहीं राज भोगमे

कचरिया तिलवडी देवरी नित्यवत्

उत्सवके दिन राज भोगमें कचरीयाकी थारी लीची आदाकी २ विरियां  
दूककी २ विरियां आताके रसकी राज भोगमें आवें उडकी दारकी अथकी  
मे १ उवारिया राज भोगमें आवें गोपी कल्लु भको नेग उडकी दारको गो-  
पी कल्लु भमें आवें भातकी थार लीची लोंगकी २ विरियां एक विरियां  
आखे लोंगको एक विरियां बुकनीको उडकी दार गुडकी लीची एक  
विरिया २ वा दाड विरिया उडकी दार

मगसर वद १ कु मनोहरके लडुका

॥ मगसर वद २ ॥

कुं तिल साकली

॥ मगसर वद ३ ॥

कु

॥ मगसर वद ४ ॥

के दिन श्री दामोदरजी महाराज सात स्वरूप पधराये सो उत्सव  
वस्त्र लाल जरीके श्रीमस्तकपर दुमाळा धरें हीराकी जेडी शृंगार दु-  
हरो वेणु हीराको वेम जडाऊ पिछवाई काचकी ताकैयानके कलाब-  
तुकी पवी वध पाटचीकी की खालीकी मखापकी गद चोगान सोनेके  
बाघ बकरी सोनेके मडे पल्लुवकी वंदन वार

गोपी कल्लु भमें आखे पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना पलनामें  
बदाम मिश्रीकी डेली सेव. उत्थापनमें चालनी बदाम मिश्री की डेली सेव.  
राज भोगमें छडी बल दार तीन कुंडा कचरिया नकी थारी मीये शाक  
अन सरवडीमें हांडी मलडा दूधके गोपाल कल्लु भमें मनोहरके लडुका  
वासोदी उत्सवको सधाना रबीर दूनी वजकी छाछकी चपटीया

॥ मगसर वद ५ ॥

के दिन पूणी गोपाल कल्लु भसु ६ कुं बुकीके लडुका शकर बंदको  
गुडको मीये शाक तुअरकी दार श्वेत भात होइ श्री गिरि धारिजी  
के छोटे भाई श्री गोकुलनाथजीको उत्सव तासु सप्तमीकुं उपरेव  
अष्टमीकुं लावनसाई नौमीकुं दूरके लोका शिकी कुं संकरा गरा

॥ श्रीहरिः ॥

मगसिरवरी - श्रीगुसाईजीके द्वितीय पुत्र श्रीगोविंदरायजीके उत्सव - गोपीबल्लभमें पाटीया आखे सेव सेर २ खांड सेर सुगंधी पातोला और सब नित प्रमाणे

राज भोगमें मगसिरवरी - के उत्सवमें सरवरीमें

छठ्याल दार तीन बड़ा मापद क्वारीया स्याक सेव सेर

७ ॥ पाटीयाकी खांड सेर १। सुगंधी पातोला ७। और सब

कीकी सामग्री वारा की लिखी है सो वारा न होय तोऊ दूसरी

राज भोगमें चौरवा सेर ७ ॥ मेवा भातके मेवा सेर ७ ॥ संभ

सेर ३ खेगुनी लेखे सुगंधी पावली भर.

ग्वाल भोगमें मगसिरवरी - के उत्सवमें श्रीगुसाईजीके द्वि

तीय पुत्र श्रीगोविंदरायजीके उत्सव.

वारा वूदी जलेनीको देसन सेर २ ची सेर १। खांड सेर २

खुथे वूदीको.

मेदा सेर २ जलेनीको ची सेर २ खांड सेर ५

गोपालबल्लभमें ऊपरके वारामेंसुं वूदी जलेनी कोबार आदे

मेदा पुरीकी सामग्री मेदा सेर ७ ॥ ची ७ ॥

सिखरन वडी चोरी ग ५ - मेदा ५ - खांड रतल २ ची २

दही रतल १

अछ बडाकी हांडी ताकी दाल ७ ॥ - संभमें यातीमेंसुं ५ -

मीये स्याक ताकी खांड ७ -

न. दूध घरकी सामग्री मगसिरवरी - श्रीगुसाईजीके द्वितीयपुत्र

श्रीगोविंदरायजीके उत्सवको.

१ भुंजे मेवा चालनीको तोला तीन तीन प्रमाणे.

२ अछकी हांडी बालभोगमें परावकी

३ पेवा सुपेवको दूध रतल ५ ले खांड तोला ३ सुगंध तोला अर्ध

४ बरफीकेसरी दूध रतल ५ खांड तोला ५ केसर तोला अर्ध

सुगंध तोला अर्ध.

५ दध हांडीको रतल ३ वरा ठोले ५ सुगंध पातोला.

- ६ मरुतको दूध रतल ४॥ खांड तोला १८ सुगंध ५॥ केसर ६॥  
 ७ गुलाभ कतलीकी खांड सेर अर्ध फूल गुलाभी १०  
 ८ बिलसाईकी खांड सेर ५ र्ध ५॥ केसर बाल ५ पेंग भावे ख-  
 बीजा भावे देखा.  
 ९ मौने दही रतल ६॥ खांड रतल १  
 १० जे क्यो दही रतल ॥ अर्ध जीरो लेण.  
 ११ साग घर्मे सुतर मेवाकी छाव उ सव भोगकी उ थापन प्रमाणे

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

अरभीकूं लारनसाही नोभीकूं कुरके गुंडा दसभीकूं राकरपारा  
६ कूं श्रीमहाप्रभुजीके आभरण गुंजेके तथा चतनमोष

॥ मगसर वद ८ ॥

कूं श्रीगोविंदरायजीको उत्सव ता दिन हरे श्याम वरअ नहीं सादन  
के व कीमखांपके पीरे वा लाल कुलह जंडऊ जोड कामको गोपी  
खुलजे धरे गोपी वल्लु भमे त अरकी दार राज भोगमे हांडी मलडा दूधके

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2  
www.valabhacharya-agraahara.org

॥ मगसर वद ९ वा १० ॥

www.valabhacharya-grupa.org

(Pushimargiya Research Portal)

नोंभीकूं वा दसभीकूं मंगल भोग रोलीको हेडि खीरको डकरा मंग-  
की कडीके शाक तेलके बेगनके शाक भुजेना कयेरी लोनकी नीकेरी  
आदा पाचरीकी मारनकी वूराकी घृतकी गुडकी नित्यकी कयेरी  
मलाईकी मारनकी वूराकी सधानकी दहीकी डकरिया दूधको डकरा  
(राज भोगमें उडकी रोये तामे तिल डारे कयेरी लोनकी मारन-  
की वूराकी घृतकी गुडकी)

एकादशी कूं (मगसर वद ११)

मगद वेसनको

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

द्वादशी कूं (मगसर वद १२)

शृंगार वेजनी सादनके वरअ लाल जरीकी फतबी श्रीमस्वकपे  
छज्जेदार नीरा लूमकी कलंगी हीराकी पहुंची श्रीकंटमें कंबी दुगदुगी  
वाजू नहीं शृंगार हलके मंगल भोगमें गोपीवल्लु भमे तथा पूरी घृत  
वूराकी कयेरी आवे शृंगार भोगमें आखो दिनमें मब्डी आरोगे  
द्वादसीको नेम नहीं

॥ मगसर वद १३ ॥

Sanshan

Shri Mataji Maharaj

Mota Mandir

के दिन गोपीवल्लुभमे कडा आरोगे पूजेकी वेई कयेरी लोनकी नी-  
वूकी आदा पाचरीकी मारनकी वूराकी घृतकी गुडकी सरडीमे भात वू-  
अरकी दार राज भोगमें हांडी मलडा दूधके गोपालवल्लुभमे श्रवथके  
॥ मनोहरके लडुवा आज श्री घनश्यामजीको उत्सव लाल सादनके

हरी जोड़ी पंजाकी कुलह जोड कामको शृंगार भारी.

॥ मगसर वद १४ कुं ॥

॥ मगसर वद ३० ॥

॥ मगसर सुद १ ॥

॥ मगसर सुद २ ॥

॥ मगसर सुद ३ ॥

॥ मगसर सुद ४ ॥

॥ मगसर सुद ५ ॥

॥ मगसर सुद ६ ॥

॥ मगसर सुद ७ ॥

कुं बडे श्री गोकुलनाथजीके उत्सव वधाई बैठे श्री गोकुलनाथजीके उत्सवकी. अष्टमीकुं सात स्वरूपकी नौमीकुं श्रीगुसाईजीके उत्सवकी आज श्री गोकुलनाथजीके उत्सव. प्राचीन जडाऊ कुलह रेसनी लाल छपाके वस्त्र लाल जोडी एक रंगे शृंगार दुहरो गोपी वल्लु भमें नूअरकी दार भाव आरोगे. राज भोगमें शकर कंदको गुडको मीये शाक आरोगे. हांडी मलजा दूधके गोपाल वल्लु भमें धांसके लड्डुवा आरोगे शतरंज सोनेकी वेन्न जडाऊ गेंद चोगान सोनेके जहा श्री गोकुलनाथजीके पादुकाजी विराजते होइ तो श्रीगिरिधरजीके उत्सववत् सररीमें अनसररीमें दूधधरकी सामग्री श्रीमहाप्रभुनके अभ्यंग होइ.

॥ मगसर सुदस्थान

श्री गोवर्धनजी महाराज सात स्वरूप पधराये सो उत्सव. वस्त्र लाल कौमखांपके जोडी कुलह होराकी जोड कामको शृंगार दुहरो पिछवाई कौमखांपकी पाटचौकीकी खोली कौमखांपकी वेणु होराकी वेन्न जडाऊ गेंद चोगान सोनेके चोपड जडाऊ गोपी वल्लु भमें भातकी धार छडी यल दार पकोडीकी कवी मीये शाक

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2  
www.vallabhacharya-agrahara.org  
www.vallabhacharyakrupa.org  
(Pushtimargiya Research Portal)

गोपाल वल्लभमें दही धरा वासोंदी होंडी मलज दूधके वडाको छछको  
उवरा आधो पाठिया मीने शाक.

॥ मगसर सुद ९ ॥

के दिन श्रीगुसाईजीके उत्सवकी बधाई बैठे.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

॥ मगसर सुद १० ॥

के दिन शकर पारा.

www.vallabhacharya-agrahara.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushtimargiya Research Portal)

॥ मगसर सुद ११ ॥

के दिन शृंगार वस्त्र हरी सादनके कसु मल गोल पाग लाल दीरे  
याईके बंद पहुंची कंठी दुगदुगी हीराकी वाजू नहीं पहुंची खोटी  
धरे फतवीके शृंगारमें वंदके शृंगारमें मंगल भोगमें गोपी वल्लभमें  
गोपाल वल्लभमें खीर वडा वूरा की कयेरी आरोगे. नित्यकी कयेरी  
हू आरोगे. आखे दिनमें मठजी शृंगार हलको द्वादस कुंनेमन  
है. जब सावकाश होइ तव आरोगे. दूसरे दिना नीचें लिख्यो है.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ मगसर सुद १२ ॥

के दिन गोपी वल्लभमें पुरीके ठिकाने भरमां पुडी चूकी पुडी आ  
दाकी कच्चर अरोगे लोनकी कयेरी बडी और कयेरी नित्यकी.  
मगसर सुदीमें मंगल भोग वेगन भातको घृतको कवेरा कचरीयाकी  
शरी पापड मिरचकी कबी मिरचको साक साक छोके ४ भुजेना २  
सामग्रीकी थार नित्यकी कयेरी. दहीकी उवरीया दूधको उवरा. स-  
खडीमें कयेरी लोनकी नीवकी आदा पाचरीकी.

Shri Madhukrishnaji Maharaj

॥ मगसर सुद १३ ॥

के दिन श्री गिरिधारीजी महाराज श्री नाथजीके यहां छप्पनभोग  
शुरू कीयो सो उत्सव - श्रीनवनीत प्रियाजीको शृंगार लाल जरीके

रुद्र श्रीमस्तकपे लाल जरीको टिपारा जोड कामको मोदणी श्वेत ज-  
रीके हीराकी जोडी शृंगार भारी उत्सवके कलीके जुहीके वल्लु भी चंद्र  
हार शृंगार दुहरो वा इरुहरो गेंद भौंगान सोनेके चोपड जडाऊ पि-  
छवाई पाट नोकीकी खोली लिसेसाकीमरवापकी मंगल भोगसु चंद्र  
कला आरोगे गोपाल वल्लु भमे आरवे दिनमें

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

गोपी वल्लु भमे लोंग भानु पानकी कबी कचरियाकी थारी मीचे शाक-  
राज भोगमें छडी पल हार मीचे शाक आधा पाटिया हाडी मलज दुधके  
www.vallabhacharya-agrahar.org  
www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushimargiya Research Portal)

के दिन गोपाल वल्लु भमे बदामको सौरा बरपी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद १ ॥

के दिन गोपाल वल्लु भमे बदामको सौरा बरपी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद २ ॥

बदामको सौरा बरपी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद ३ ॥

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

के दिन गोपाल वल्लु भमे बदामको सौरा बरपी पलनामें आरोगे  
आरवे पौषमें

॥ पौष वद ४ ॥

के दिन बदामको सौरा बरपी पलनामें गोपीवल्लु भमे आरोगे

॥ पौष वद ५ ॥

के दिन गोपाल वल्लु भमे बदामको सौरा बरपी पलनामें आरोगे

Sansthan

॥ पौष वद ६ ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

के दिन श्रीकल्याणरायजी श्रीगंगाईजीके नातीको उत्सव वल्लु  
हरे उग्राम नहीं जोडी खुलती कुलह पसीकी वा जडाऊ जोडकामके  
Mota Mandir

॥ पौष वद ७ ॥

के दिन लाल साठनके वस्त्र कसूमल पाग छज्जेदार व गोल जोड़ी सोनकी शृंगार हलको गोपाल वल्लु भमें बदामके सीरा बरपी पलनामें

॥ पौष वद ९ ॥

विना कि नारीके

श्री गुसाईजीको उत्सव - वस्त्र पीरी साठनके उत्तके कुलह जुन्नाष्ट मीकी शृंगार दुहरो जोड़ी प्राचीन लाल हमेल प्राचीन फांदनापे गा दीपे शृंगार जुन्नाष्टमीवत् कमलपत्र होइ चसनी सोनेकी मोतीकी धरे मोतीकी कमल अजम नही शृंगार जुन्नाष्टमीको दिवारीको श्रीगुसाईजीके उत्सवको एकससके होय वस्त्रको पर अरोगके क्रम श्रीगिरिधरजीके उत्सववत् पांचो भात श्रीगुरुजीकु श्री महाप्रभुजीकु उवरना सहित अक्षयंग होइ आभरण गुजा धरे केसरी डेरि आकी ओढनी ओढे राज भोगमें न्यारो भोग श्रीमहा प्रभुजीकु आवे श्रीमुख खुल्यो रहे तिलकको क्रमहु श्रीगिरिधर जीके उत्सववत् कुलह रही आवे श्रीगुसाईजीके उत्सवकुं पीरी साठनकी रजाई सब टिकानेके सुधन कवाय गदुड छोटे बडे दोऊ तरहेके सांझकुं कुलहवै ताइते हथो चौकी श्रीकंठमें

॥ पौष वद १० ॥

के दिन शृंगार उत्सवको फांदनाकी गारीकी हमेल प्राचीन नहीं धरे फांदनापे ताइतकी हमेल डुच्छ होइ तो धरे छडियलदार डुवकीकी कबी गोपाल वल्लु भमें बूंदीके लडुवा आरोगे सांझकुं कुलह वडी होइ टोप धरे श्रीकंठमें चौकी रहे

॥ पौष वद ११ ॥

कुं श्री गोविंदजी महाराजको उत्सव श्वेत कीमखापके वस्त्र जोडी कुलह सांझको अरोगके क्रम श्रीविठ्ठल रायजीके उत्सववत्

॥ पौष वद १२ ॥

कुं गोपाल वल्लु भ

॥ पौष वद १३ ॥

कुं गोपाल वल्लु भ

॥ पौष वद १४ ॥

के गोपालवल्लभ.

॥ पौष वद २० ॥

के गोपालवल्लभ.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

www.vallabhacharya-agrahara.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushchimargiya Research Portal)

श्री गुरुसंई जीने उत्सव पौषे और मावस पहले खर मंडा आरोगके विचार होय जा दिन ताके आगले दिन संध्या भोगकी थार १ निरूपकी १ खर मंडाकी उत्सवके संधाना दूसरे दिना मंगल भोगमें गोपीवल्लभमें गोपालवल्लभमें खर मंडा मुगोजकी छाछ उत्सवको संधाना आरोगें वस्त्र हरी कीमखांपके हीराको टिकारो शृंगार भारीजोडी हीराकी श्रीकंठमें बही धरें चंद्रिका कतरा सादा. राजभोगमें अरोगें. तेलकी खरखरी तामें अजमां लोन पडे दूसरे दिना गोपीवल्लभमें पुरीके टिकाने कचौरी छोक्यो दही लोनकी कवेरी आरोगें निरूपकी कवेरी सब आवें गोपालवल्लभमें राखोजवृत्तमा घृतकी कवेरी

॥ पौष सुद १ ॥

के गोपालवल्लभ.

॥ पौष सुद २ ॥

॥ पौष सुद ३ ॥

॥ पौष सुद ४ ॥

॥ पौष सुद ५ ॥

॥ पौष सुद ६ ॥

॥ पौष सुद ७ ॥

॥ पौष सुद ८ ॥

॥ पौष सुद ९ ॥

॥ पौष सुद १० ॥

श्रीरा सुपेद जरीके वस्त्रभी -  
सुपेद जरीके कतरा सपेद लपरी -  
बादलाकी हीराकी जोडी हलके  
शृंगार प्रलका धरे

नी तिन  
प्रलका विपुरी सो दे  
आ धो सुख नीलाम्बर हो हंकी

श्रीमट को पाट नगी सपेदको

| भोजीके दिन |

बला लाल धीटके हीराकी जोडी बही,  
कंठी, हांसे बल बही कर्णफल ५  
सादा चंद्रिका मधवको शृंगार श्रीरा  
छत्रेदार.

Sansthan  
Shrimad Gokulnathji Maharaj  
Mota Mandir

- ॥ पौष सुद ११ ॥
- ॥ पौष सुद १२ ॥
- ॥ पौष सुद १३ ॥
- ॥ पौष सुद १४ ॥

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

॥ पौष सुद १५ ॥

पौष सुदी में जा दिन माडा अरोगाइवको विचार होइ ताके आगले दिन रायन भोगमें माडा उत्सवको सधाना आरोगे दुसरे दिन मंगल भोगमें गोपी वल्लभमें गोपाल वल्लभमें माडा चुकली कांती वडा उत्सवको सधाना आरोगे शृंगार वस्त्र वेंजनी श्रीमखापके हीराकी जोडी श्रीमस्तक पर हीराको फगा चंद्रका सादा शृंगार भारी श्रीकंठमें कही संक्रातिके पहले दिन भोगीको उत्सव अभ्यंग होइ लाल छोटकी कवाय पहरे छोटको वीरा छप्पेदार बांधे चंद्रका सादा हीराकी जोडी कर्ण फूल ४ श्रीहस्तमें रत्नचौक मध्यके पोदना शृंगार मध्य तांडे

गोपी वल्लभमें भातकी थार छडी पहदार चकोडीकी कदी मौये साक पूरीके टिकाने नीला आरोगे नीलाके संग क्योरी लेनकी माखनकी वूराकी घृतकी गुडकी नीवुकी आदा पाचरीकी निलकी कटोरी आवे

राज भोगमें आधो पाटिया मौये साक वडाकी छछको डवरा गोपाल वल्लभमें वूदी के लडवा आरोगे

॥ संक्रांति ॥

२ कर्ण फूल श्री प्रोगने पटकी तबल  
१ माळा १ मोतीकी

संक्रांतिके शृंगार वस्त्र लाल छोटके जोडी ~~हीरा~~ हीराकी छोटको वीरा गोल ~~लसकी कलंगी~~ शृंगार हलको गोपी वल्लभमें खीचडी कनरियाकी थारी वेडीकी कदी

राज भोगमें आधो पाटिया गोपाल वल्लभमें पुवाकी थार घृत वूराकी क्योरी संक्रांति सेवेरकू होय तो राज भोगमें दूसरा

रोगे सांझक संक्रांति होइ तो दूसरे दिन वृमर राज भोगमें आरोगे.  
सांझक उत्थापनमें वा संध्याभोगमें वा शबेनमें सेवेरक मंगल भोग-  
में वा गोपीवल्लभमें वा राजभोगमें तिलवा आरोगे. चांदनी सब  
तरहकी मीठे शाक तुलसी शंखोदक धूपदीप होइ.

एक दिन राजभोगमें नीला आरोगे क्येरी लोनकी माखनकी बुराकी  
घृतकी गुडकी गोपालवल्लभमें लौलह का बुराकी क्येरी आरोगे माघ-  
वदीमें गोपालवल्लभमें गुडकी सामग्री आरोगे कोई दिन गोपीवल्ल-  
भमें पुरीके टिकाने रतालकी गुझिया भरताकी गुझिया चनाकी  
गुझिया आदाकी गुझिया एक वर आरोगे (सूरणकी नहीं.)

॥ माघ वदी ८ ॥

कुं शृंगार वस्त्र लाल कीमखांपके हीरा कुलह जोड कामको हीरा-  
की जोडी शृंगार भारी वडे श्री दाऊजी महाराजको उत्सव अरौ  
गवेको क्रम श्री विड्डल रायजीके उत्सववत् राजभोगमें दिखरनकी  
को डवरा आरोगे. एक दिन गोपीवल्लभमें वा राजभोगमें सिन्डी

॥ माघ वदी ३० ॥

कुं जरीके वस्त्र धरे जोडी खुलती शृंगार भारी होइ कुंडलके मेल-  
में कुंडल धरे. कर्णफूलके मेलमें ४ कर्णफूल धरे.

॥ माघ सुद २ व ३ ॥

कुं गोपीवल्लभमें टोकला आरोगे क्येरी माखनकी बुराकी लोनकी  
घृतकी गुडकी मैदाकी पुरी खरखरीह आरोगे. निलकी क्येरी  
हु आवें. राजभोगमें गोपालवल्लभमें बुराकी और माधुलीको दाख  
पधरावे. उडदकी वेधमी आरोगे ताके संग क्येरी लोनकी, मा-  
खनकी बुराकी घृतकी गुडकी आरोगे.

॥ माघ सुद ४ ॥

कुं शृंगार वस्त्र लाल जरीके श्रीमस्तकपै किरिट हीराको धरे जो-  
डी हीराकी शृंगार दुहरो उत्सवकी हरी माला लालमाला श्वेतमाला

वृमर राज भोगमें आरोगे.  
सांझक उत्थापनमें वा संध्याभोगमें वा शबेनमें सेवेरक मंगल भोग-  
में वा गोपीवल्लभमें वा राजभोगमें तिलवा आरोगे. चांदनी सब  
तरहकी मीठे शाक तुलसी शंखोदक धूपदीप होइ.  
एक दिन राजभोगमें नीला आरोगे क्येरी लोनकी माखनकी बुराकी  
घृतकी गुडकी गोपालवल्लभमें लौलह का बुराकी क्येरी आरोगे माघ-  
वदीमें गोपालवल्लभमें गुडकी सामग्री आरोगे कोई दिन गोपीवल्ल-  
भमें पुरीके टिकाने रतालकी गुझिया भरताकी गुझिया चनाकी  
गुझिया आदाकी गुझिया एक वर आरोगे (सूरणकी नहीं.)  
॥ माघ वदी ८ ॥  
कुं शृंगार वस्त्र लाल कीमखांपके हीरा कुलह जोड कामको हीरा-  
की जोडी शृंगार भारी वडे श्री दाऊजी महाराजको उत्सव अरौ  
गवेको क्रम श्री विड्डल रायजीके उत्सववत् राजभोगमें दिखरनकी  
को डवरा आरोगे. एक दिन गोपीवल्लभमें वा राजभोगमें सिन्डी  
॥ माघ वदी ३० ॥  
कुं जरीके वस्त्र धरे जोडी खुलती शृंगार भारी होइ कुंडलके मेल-  
में कुंडल धरे. कर्णफूलके मेलमें ४ कर्णफूल धरे.  
॥ माघ सुद २ व ३ ॥  
कुं गोपीवल्लभमें टोकला आरोगे क्येरी माखनकी बुराकी लोनकी  
घृतकी गुडकी मैदाकी पुरी खरखरीह आरोगे. निलकी क्येरी  
हु आवें. राजभोगमें गोपालवल्लभमें बुराकी और माधुलीको दाख  
पधरावे. उडदकी वेधमी आरोगे ताके संग क्येरी लोनकी, मा-  
खनकी बुराकी घृतकी गुडकी आरोगे.  
॥ माघ सुद ४ ॥  
कुं शृंगार वस्त्र लाल जरीके श्रीमस्तकपै किरिट हीराको धरे जो-  
डी हीराकी शृंगार दुहरो उत्सवकी हरी माला लालमाला श्वेतमाला

वहू भी हार कलीको हार जुहीको हार चंद्रहार शृंगार भारी मंगल भोगमे  
गोपीवल्लभमे गोपालवल्लभमे बुड कल घृत वृषकी कवेरी आरोगे आसे  
दिनमें मण्डी आरोगे.

॥ माघ सुदी ५ ॥

वसंत पंचमीके उत्सव मंगल भोगमें आरके दिनमें सेवके लडुकाको  
वडो बाल भोग आरोगे श्री गुरुजीकी गादी वसंतकी तापे चौपड ता  
उपरना विछे श्री महा प्रभजी भीतर रजाई ओढे वा सुपेती ओढे  
ऊपर खेस तापे उपरना दोइ रंगीन वस्त्र होइ ता दिनार उपरना नपे  
ओढनी ओढे. सिहासन पिछवाइ चढ़वा मुढाके टकना श्वेत मुढाके  
चुनके वस्त्र साडी श्वेत भातिवार सुनहरी दिनारीकी नौली लाल  
लहंगा वेंजनी वा हज्यो श्वेत सूथन पाग वाया तनियां पुटका अतर  
बो वा मिलमां लगायके धरे मुढाके वस्त्र जरीके रेशमी निकासने  
श्वेत वसंतकी धरने नये वस्त्र धरने दिनारीको जन्माष्टमीके हिंडोरा  
को पहले वर्षको साज राखने. हरी साटनकी रजाई ये सव दिना  
नेकी नई मुढाके सूथन कवाय गद्द बड छोटे दोऊ औरके दूसरे  
उत्सवके साडी लहंगा तीजाके हारीकी गुस्ताके दगा हराकी राखने  
ऋतु अनुसार मुढाके वस्त्र पलटे सव नये जोड वर्ष दिन ताई रहे  
वसंतकू अभ्यंग होय वस्त्र श्वेत चुनके उत्तुके फूलगर श्रीमहाप्रभु  
जीकी रजाई हरी साटनकी उत्तुकी तापे उपरना तीन तापे ओढनी  
श्रीगुरुजीकू वागा उत्तुको वाहरकी सिडकीकी पाग चंद्रिका सादा  
धरे जोडी हरे लाल मौनाकी कर्ण फूल ४ लाल सौस फूल सरपेन  
लाल हत सांकडा धरे मुद्रिका नहीं श्रीकंठमें ४० दिन ताई हांस  
नहीं फोंदना बडे धरे फोंदनापै माला मोतीकी सोनेकी मिलमां  
धरे गादी पै शृंगार मध्यु ताई आजसु हारी ताई रायनके दर्शन  
खुले. **Sanshan**  
**Shrimad Gokulnathji Maharaj**  
गोपीवल्लभमे आरखे पाटिया मीमे शाक उत्सवको सधाना.  
राज भोगमें मीवे शाक छडियलदार तीन कुंडा कन्नरिचानकी थारी  
वडीके शाक २ गोपालवल्लभमें मन्नेहरके लडुका खीर दूनी बडाकी

छाछकी चपटीया उत्सवको सधाना हांडी नहीं दूधको कवेरा नित्यको  
 फेर राजभोग आवें कलश तिवारीमें बीचमें धरने पीरो वस्त्र उवावना  
 कलश साजने खजूरके फणगा तामें वेर फूल लगावें मौर धरें  
 सरसोंकी जारी जवकी जारी धरें राजभोग सरें श्रीगकुरजी सिंहा-  
 सनपै विराजे सिंहासनपै आवेंके मौर धरें माला सब स्वस्वपहर  
 गादी पर श्वेतपट्टी धरें आभरणके ऊपर निरुध वगीचाकं नही धरें  
 कुंजसुं डोल ताई पट्टी धरें उपरनाकी फूलगरपै लाल पीतावर ४०  
 दिन ताई ओढे कुंजक हारीक डोलके पीतावर ओढे शृंगारकी  
 माला मुठा पर रहै सिंहासनपै गादीके पास अगाडीकू थागकी  
 माला २ धरें विना थागकी माला दोइ दोइ माला २ छडी २ गेंद २  
 खंड पै दोऊ ओर धरें अधिवासनको साज तिवारीमें चौकी पैधरें  
 गुलाल चंदन अवीर चोवा शंख तुलसी कंकु अक्षत गडीकी कवेरी  
 संकल्पको लोग श्रीजमुनाजलकी झारी एक भरके निजमंदिरमें  
 गोखलामे धर राखें सिंहासनके पास वाई ओरकू पडगीपै खेलके  
 भोगकी सब कवेरी धरें एक दूधघरकी सामग्रीकी एक बालभोग-  
 की सामग्रीकी कवेरी २ कदली फलदिककी एक मेवाकी एक मि-  
 गडीकी केला होइ वा नारंगी होय तो वुराकी कवेरी पास धरें  
 काकडी होय तो खोनमिरचकी धरें वेर होय तो मिरचकी धरें ४०  
 दिन ताई खेलकी कवेरी भोग आवें डोलकु नही

अधिवासन होइ आचमन प्राणायाम संकल्प करे विष्णुविष्णु ३  
 रित्यादि उत्तरायने माघमासे शुक्लपक्षे अथ वसंतपंचम्यां शुभ-  
 कारे शुभनक्षत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुण विशेषण विशिष्यां  
 शुभतिथौ भगवतः पुरुषोत्तमस्य वसंतोत्सवं कर्तुं तदङ्गत्वेन  
 कलशाधिवासनमहं करिष्ये कंकु अक्षत खेलके साजपर क-  
 लशपर किंचित् जारे गडीकी कवेरी भोग धरें तुलसी शंखोदक  
 धूप दीप चार वाती की आरती करे खेलको साज उवावें गडीकी  
 कवेरी प्रसादीमें दर्शन खुले दंडवत करके श्रीगकुरजी आदि  
 सब स्वस्वपनकू माला सहित खिलावे छडीकू गेंदकू खिलावे  
 प्रथम चंदनसू पीछे गुलालसू पीछे अवीरसू फेर चोवासू तापी

छें श्रीअंग खिलायकें गादीकूं तापीछें मालाकूं मौरकूं पिछवाईकूं सिं-  
 हासनकूं चंदनगुलालसूं खिलावे। चंदुवापर २ कयोरी चंदनकी ओरें ४०  
 दिन ताई खेलकी भोगकी थारी पिछवाईसूं खेलवे लेंगे उगइकें  
 शय्या मंदिरमें छोटी पडगौपें धरें शय्याके पास गुलाल अवीर श्री-  
 अंगके खिलाइवेमें ते मंदिरमें उडावे ता पीछें फूल मिलायकें पो-  
 लीमें गुलाल उडावे एक पाटली फूल उडे अवीर गुलाल उडावे  
 टेंग खेलवे ४० दिन ताई एक थारमें फूल विछायके खेलकी सब  
 कयोरी धरें गुलाल उड चुके माला गेह छडी मौर थारीमें धरकें  
 शय्या मंदिरमें धरें श्रीअंगकी माला सिहासनपें जेवनी ओर धरें  
 दोऊ पाटपें भोग आवें झारी १ धरें दूधघरको साज डूकहरो  
 हांडी दूधकी दूध पुरी पेडा वासोदो केसरी वरपी मीठे दही मांस  
 मिश्री कदली फलादिक लोन मिरच वूरा अनसखडीमें वूदी स-  
 करपारा कूरके गुंझा मटडी सेवके लडुवा शिरकरनवडी मीठे  
 साक चालनी सब तरहकी उत्सवको सधाना।

तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ समय होइ भोग सरें आचमन  
 मुखवस्त्र बीजा २ पुधरें पाट जोकी सरकोवे ४० दिन ताई सोनेको  
 केन रूपेके गेद चोगान त्रिधी धरें राजभोग आरती होइ झारी  
 सब भरी जांय शयनके दखीन होय लूम तुरी धरें ४० दिन ता  
 ई संध्या आरती पीछें शृंगार वडे होइ गुलालचंदन पांछें  
 कोई दिन कुलह दिपारा पेय दुमाला धरें पागको शृंगार  
 होय तव लूम तुरी धरें सो रहे आवें पोढती विरियां आगले  
 दिनकी खेली पाग होइ सो बांधें कुलह पीढती समय रही आवे

Sansthan  
 ॥ माघ सुदी ६ ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj  
 के दिन श्वेत वस्त्र वागा गोल पाग हरी फूलगर श्याम मीनाकी जोडी  
 श्रीमस्तकपें कतरा वा लमकी कलगी शृंगार हलको आखे दिनमें  
 गोपाल वल्लभमें खिचडीके नग गुंझा मटडी लडुवा आरोगे  
 श्रीनाथजी छटसूं खेलें वसंतकूं जेहकूं नहीं खेलें राजभोग-

की थार श्रीनवनीत त्रियाम्नीकी श्रीबालकृष्णजीकी थार सानके आगे  
के चमचा धरके हाथ धोई दंडवत करके श्रीनाथजीके खिलाके  
ता पीछे श्रीनाथजीकी थार साने

॥ माघ सुद ७ ॥

के दिन गुलाबी झाड़के वरुन कुलह धरे गोपालवल्लभमें वू  
दोके लडुवा

www.vallabhacharya-agrahar.org  
www.vallabhacharyakrupa.org

॥ माघ सुद १२ ॥

के दिन राज भागमें दोकल सेवके लडुवा गुडके आरगे गोपाल  
वल्लभमें

॥ माघ सुद १५ ॥

होरी जांडो रोपणीको उत्सव श्वेतचौकनो वागा चोवाकी चोली कह  
रकी खिडकीकी पाग तीन परवडाकी कलंगी दोहरो सारा कतरा  
सोनेकी जोडी श्रीकंठमें क्ये कधनखा सोनेके गादी पै माला सोनेकी  
कर्ण फूल २ हत फूल २ सोनेके आभरण पागपै सोनेके शृंगार ह  
लको अभ्यंग हांडी गोपी बल्लभमें लडुवा धार पको डीकी कदी  
मीगे शाक राजभागमें मीगे शाक आधा पाटिया एक वडीका  
शाक हांडी मलडा दूधके गोपालवल्लभमें मीगे कचोरी आरगे  
रोपणीसु जौल ताई खेलकी थारमें रंगकी कचोरी धरे तामें जे  
वी कचोरी तरावे पिचकारी भरके खंडपै धरे गुलाल उडनुके  
पिचकारी माला गेद छडी मोर खेलकी थारमें धरके शय्यामंदिर  
में धरे रोपणीसु खिचडी बंद

॥ फागुन वद १ ॥

के दिन कुंज हांडी पिछकाई सितासनमें हाशिके आगले  
दिन ताई वा कुंज ताई

॥ फागुन वद ७ ॥

के दिन शीत न होइ तो फुलगर कबी होइ ओढनी ओढे फागुन

फागुन वही ७ श्रीजीके पाट उत्सव की दिगत - वरुन केसरी किता  
 रीके जेरीयाके चोवाकी चोली धरें चोली खेले नही सिंगार मध्य  
 को चोली दीखती रहे वागा <sup>चेरदार</sup> वाक्य दार जुले केसरी धरें तीन चं  
 काको जोड़ तरा मीनाके मीनाके न होय तो वरुन के साज सब  
 केसरी अभंग होय वय मलमलका धोयो हुको बदलने टट  
 न होइ तो मोजा त. परगुल बडे होइ ओर टट होइ तो  
 खेलके समे बडे होइ जाइ पाछे टट पडती होइ लखमोजा  
 त. परगुल धरे मोजा त. परगुल बडे भये बिना मुकुटको  
 सिंगार न होइ श्रीनवनोत लख त. लखजी मोजा त. पर  
 गुल बडे भये पीछे ओढनी धरे सो ओढनी वित खेले नही  
 त. वागाकी पिछारीकी फडक खेले नही. ओढनीके नीचे  
 आइ जाइ श्रीजीके पाट उत्सव ओर बगीचा त. कुंज हारी  
 जेह इतने दिन ओढनी खेले नित न खेले गरीके आभरण  
 के ऊपरको वरुन बडे सो न गंको ओर मुकुटजा दिन धरे  
 ता दिन सिंगार बडे होइ काछनी बडे होइ ता स्थान धर  
 दार वागा धरे त. कोई समे मुकुटके सिंगारमें काछनी बडे  
 भये पीछे सुधन पटका धरें चेरदार वागा न धरें पटका  
 ककरसू वधे एक छेर टुको राखने एक छेर लंबो राखने  
 टेगे न राखने चेरदार वागा त. सुधन पटका जो धरे होइ  
 त. पागको चोवा सु खिलावने या प्रमान जो जो सिंगार होइ  
 ता ता प्रमाने करनो त. श्रीजीके पाट उत्सवके दिन भावना  
 पधारे तासु एक दिन पहले छठके दिन सांझके संझमो  
 त. सेन भोग आके ता समे विवारीमे बडे श्रीमदन मोहनजी  
 की चोकी उष्ण कालमें विछे हें ताके ऊपर सुपेव उपणी तर  
 खासवाकी रुईदार खोली चढाके तापे सुपेव खोली चढावनी  
 वाके ऊपरकेसरी उपनी विछावने केर पिछवारी पीठके त  
 क्रियाके टेकाके लीचे छोटी लकडाकी पीठ चोकीके पिछारी

लगावनी फेर गोल तकिया पाटियाकी पीठक ऊपर उपनीसुं  
 लपेटके धरनी पीठकमें दोइ कीला राखने आभर्न के पर छनी  
 बाधवेकु फेर रुईदार गादी सुपेत खोली चबयके विछावनी फेर  
 छोटै श्रीमदनमोहनजीकी रजाई श्रीजीके नथे उपनी किनारी-  
 को भयो होइ तामे साटनी फेर वाके भीतर टंठ होइ तो खे-  
 टो गइड टंठ न होइ तो दूतो भीतर विछावनी रजाईके भीतर  
 जा प्रमाने श्रीयकरजी धरे हें ताप्रमाने धरावनी आत्मसुख  
 श्रीमदनमोहनजी धरे हें ताप्रमाने गादी पे धरावनी श्रीनाथ-  
 जीके चोकी पे गादी तकिया न पे धरावनी भावनासु फेर सिं-  
 गार धरनी मोतीकी माला सोनेकी माला पिरोजाको हार त माला  
 मीनाको हार ओर दोइ तीन माला फेर गुंजाकी दोतीन माला  
 धराने दुहरी या रीतसुं सिंगार करके श्रीजीकी वंवी जो रहे हे  
 इतनी जगे राखनी फेर सिंगारके ऊपर चौरसा ढाकके सिजा-  
 मंदिरमें चोकी राखनी सो वा दिन सव मौकू सवेरे श्रीनवनीव-  
 लाल पलना झुल चुके तक या प्रमाने दूसरी चोकी पधरावनी  
 श्रीनवनीव लालकी आगे स विछाड राखनी भोगमंदिरमें फेर  
 भावनाजी सेसु दूसरी चोकी भोगमंदिरमें केसरी उपरखा विछाड  
 श्रीनवनीव लालकी जेवनी ओर विराजे आगेसुं दूसरी चोकी  
 भोगमंदिरमें केसरी उपरना विछाडके श्रीनवनीवलालके लिपे  
 तैयार राखेनी ओर सखडी अनसखडी सव दुहेरो भोग साजना ताहा  
 ताई श्रीयकरजी पलना झुल्यो करे फेर भोग साजि चुके श्रीनव-  
 नीवलालकी चोकी भोगमंदिरमें पधरावनी तापे श्रीनवनीवलाल-  
 कू पलनामेसुं चोकीपे भोगमंदिरमें पधरावनी फेर झारी नित-  
 प्रमाणे भरनी फेर श्रीनाथजीकी चोकीपे भावना पधराई होव ता-  
 पलनामेसुं श्रीनाथजीकू भावनामे पधरावने फेर भोगमंदिरमें चो-  
 कीकू पधरावनी श्रीनवनीव त्रियाजीकी चोकी के बराबर दोष झारी  
 आमने सामने धरनी फेर श्रीनाथजीकू फूलनकी माला कडो  
 धरावनी ओर सरूपनकू राजभोग सरै पीछे धरावनी माला

धराये पीछे दंडवन करने फेर खिलवने चंदन गुलाल अवीर  
 चोगासु खिलवने थोरे थोरे और स्वरूपनकु भी थोरे थोरे खिलव-  
 ने ता पीछे बहुवेगै थोरो थोरो खिलवले फेर थार साजने सव  
 ठिकानेके फेर सव स्वरूपनकु तुलसी समर्पनी. फेर भोगमें वम-  
 चा पधरावने समर्पनी फेर सव ठिकाने सुंखोदक करने फेर  
 धूप दीप करने फेर सखडी अनसखडी भोग रथो होय सा सा-  
 जनी. भूलचक तपासनी कछ रहे न जाइ फेर आरोगे कि-  
 वारमंगल होइ जाइ फेर निजमंदिरमें सिंघासन दोयके आगे  
 दोऊ श्रीमदन मोहन लालकी चौकी दो विछावनी होइ चौकी-  
 नके बीचमें जगे राखनी त. तीनोंइ सिंघासनपे नितनेम प्र-  
 माने तैयारी कर राखनी. छडी नितसु दोय अधिकीमें त.  
 गेदं नितसु होइ अधिकीमें त. पित्रकारी नितसु १ अधिकी-  
 में त. खेलको साज सव थारमें तैयार कर राखे चंदन गु-  
 लाल अवीर चोगा त. उडाइवेको गुलाल अवीर नितसु इनो  
 त. कंकू त. रंग लिखे प्रमाण तैयार राखने पित्रकारी सव  
 तैयार राखनी चनके दीवलासि आरवी सुधीया ४ सुधा सव  
 तैयार राखनी चांदीकी थारो होय तो चांदीकी नही तो कासे-  
 की तैयार राखनी. बीज १ कंकूके टपका कर राखने बीजी १  
 अधिकीमें तैयार राखने. समें होइ भोग सरे श्रीनाथजीकूं  
 तथा श्रीनवनीत प्रियाजीकूं निज मंदिरके बीचमें पधरावने त.  
 सव स्वरूपनकु अपने अपने चौकी पे पधरावने. आचमन मुख-  
 वस्त्र होइ सव स्वरूप कीडी अपनी अपनी आरोगे पीछे सव स्वरु-  
 माला पहरे श्रीजी छोटे माला होइ २ वंची प्रमाणे पहरे फेर  
 खेल होइ छडी भेदक आंबाको सोर धरे खेलके भोगकी थारी  
 होइ. स्वरूपनके आजू काटा उपरनासो ठाकरे धरनी श्रीजी श्री  
 नवनीत प्रियाजीकूं महाराज त. बहुवेगै सव खिलवने फेर कडे  
 मदन मोहनजीकूं छोटे श्रीमदन मोहनजीकूं या क्रमसु खिलवने  
 ग्वाल मंडलीकूं त. पादकाजीकूं नहीं खिलवने दरसन सुखती.

विरिगां विखावने श्रीनाथजीके इहा चोकी पे छत्री गेंद पिचका-  
 री धरनी ओर सब ठिकाने दरसन खुले ता विीरया सब छडी  
 गेंद पिचकारी धरनी फेर श्रीजीकू त सब सरूपनकू खेल हो-  
 य पीछे धारोसो गुलाब अकीर उडावने फेर मुखारविन्दपे गु-  
 लाल लगयो होय ता पाछना फेर गेट सरूपकू वेणु वेत्र धराव-  
 नी फेर तिलककी आरती जोरती फेर झालेर घटा शरवनाद  
 होय श्रीनाथजी सहित सब सरूपनकू दर्पण दिखावने फेर  
 श्रीनाथजीकू तिलक करनी बीजा दोइ धरने फेर श्रीनवनीत लाल-  
 कू तिलक होइ बीजा २ धरने बडे श्रीमदन मोहनजीको तिलक  
 होइ छोटे श्रीमदन मोहनजीको तिलक होइ बीजा दो दो धरने  
 ग्वाल मंडली त पादुकोजीको तिलक नहीं

फेर मुठिया वार आरती करनी राई लोन करनी नोछाकरक-  
 रनी फेर बालकनकू त बहु बेगीनकू तिलक करनी त मुखि-  
 यानकू तिलक करने फेर हाथ धोयके दर्पण दिखावने फेर  
 वेणु वेत्र कडे करती फेर श्रीनाथजीके त सब सरूपनके  
 वरण स्पर्श करने फेर बंडोत करके हाथ धोवने फेर प-  
 रक्रमा करनी फेर श्रीनवनीत लालकू सिंघासनपे पधरावने मा-  
 ला सब रही आवे कडी न होइ सांझकू संझा आरती पीछे मा-  
 ला बडी होइ श्रीनाथजीकी छोटी माला रही आवे श्रीजीकू मा-  
 ला सुधा नितके ठिकाने श्रीनवनीत लालके पास पधरावने और  
 सब सरूपनकू अपने अपने सिंहासनपे पधरावने फेर श्रीजीकी  
 बडी माला छडी गेंद सब खेलके थारमें सिजा मंदिरमें धरने फेर  
 सब आभरण बडे करने फेर भावना पधराई होइ सो पधराय  
 लेनी भावनाके ऊपरकी गुलाब होइ सो गुलाब बालकनके ऊपर  
 उपरना श्रीगुरजीके सोम खरिवर ऊपर फेर चोकी उगइ लेनी त  
 पिचकारी खेलके थारमें धर देने सब सरूपनको झारी तदकडी-  
 में सिंहासनपे यथा क्रमसुं धरनी त तिलकके बीजा झारीके  
 पास धर देने श्रीजीके बीजा बंटीदी आडी धरने श्रीनवनीत लालके

वीछ श्रीनवनीतलालकी झारीकी आजी धरने फेर उपरना बर  
 देने श्रीमदन मोहनजीके वीछ श्रीमदन मोहनजीकी झारीके  
 पास धरने उपरना सुं ठकने सब सूर्यपनकी झसे सब  
 सरूपनके पास पधरावनी श्रीनाथजीकी झारी प्रसदीजलमे  
 उलावनी ओर सब झारीनके ऊपर उपरना बरने श्रीनवनीत-  
 लालके पीतावर उठावनी आबके ओर धरावनी फेर निर-  
 रीत प्रमाणे ७ रसन खोलने फेर सब ठिकाने छडी गंद  
 पिचकारी धरने फेर बदनेसुं बचा क्रम खिलाने ग्वाल-  
 मंडलीकुं शालग्रामजीकुं पादुकाजीकुं सब ठिकाने खि-  
 लावने आही प्रमाण सब ठिकाने गुलालसुं खिलाने सब  
 ठिकाने कपोलनपे गुलाल लगावने फेर आही क्रमसुं अ-  
 बीरसुं खिलाने तासमे अबीरको मेथी पेठ पका करणे  
 फेर आही क्रमसुं चोवासुं सब ठिकाने खिलाने फेर पिठ  
 वाई सिंघासन ब्रज भक्त त. सुंड त. चहुना सब ठिकाने खि-  
 लावने कंकुके रंगसुं त. गुलालसुं फेर रंग वैष्णवनेके ऊ-  
 पर उठावने पिचकारी क्ये रंगसुं फेर अबीर गुलाल  
 उठावने फेर दंडोत करके मुरवारविन्द पोछने फेर खेतको  
 साज तीनो ठिकानेको धरने थालने छडी गंद मोर रंगके  
 व्याला पिचकारी सब साजने. थारको सिंघाके पास चो-  
 कोपे धरने त. खेलके भोगकी थारी नितके ठिकाने सिंघा-  
 के पास धरनी गुलाल झट कछारनी फेर सिंघासनपैसुं  
 कपडासुं गुलाल झट कछारनी गादी तकिया सिंघासनपै  
 सुं फेर सिंघी पेडा पाट सब सरूपनके माडने फेर खिले-  
 ना चोपड सोनेकी माडनी दर्पण धरने तिथी धरनी चोकी ध-  
 रनी फेर गुलावके फूल कमलके फूल त. श्रीहस्तमें फूल-  
 की वेणु त. कली सब ठिकाने धरनी वेणु वेन धरावने झारि-  
 नपैसुं उपरना उदाय लेने लाल दरना उठाइ लेने फेर द-

Core Mota Mandir - Pracheen Kranti 2

www.vallabhacharyaagrahara.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushimargiya Research Portal)

Shri Taj Mahal Ki Pustak

Sansthan

Shri Mad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

५६ (६)

र्पण दिखावने फेर आरती करनी आरती होती विरियां फूल-  
नकी वृष्टि करनी आरती भये पीछे दर्पण दिखावने फेर श्री-  
हस्त मेंसुं कली कमल वेणु वेन सो की बडे करने गुलाबके फूल  
बडे कर लेने माला सगरी रही आवे कडी न करनी सांझकूं  
संज्ञा आरती पीछे माला सब कडी कर लेनी गुल मडली त-  
पादु काजी को माला कडी करनी सिजाके चारसा उखवने क्र-  
वासीनकूं नचावने फगवा गुवावने फेर पैग विखवने फेर  
अनोसर करने या प्रमाण श्रीनाथजीके पाट उरसवकी सब से-  
हा पोहननी महाराज पोचे आप तः बह बेयी न विराजवे  
होइ तो मुखिया सब पोचे सांझको नितरीव प्रमाणे सब  
पोचनी संख्या आरती पीछे सब गुलाल झार जारनी श्री-  
अंगपे थोडी सिंगार रहे पोहननी बाजू बढ रहे नितरीतप्र-  
माणे शायन आरती होइ अनोसर होइ.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

Sansthan  
Shrimad Gokulnathji Maharaj  
Mota Mandir



राज भोगमें आधे पाटिया मीचे शाक मनोहरके लडुवाको गोपालवल्लभ  
 राजभोग सरे पीछे फूलको मुकुट धरे बगीचामें पधारें नौ नौके-  
 यामें उत्तरमुख विराजे माला सब स्वरूप पहरे भोग आवें सा-  
 मग्री चंद्रकला खोवाके गुंजा दही थडा उपरोध गिरखरन वडी कज-  
 को छछ कोडवरा खीर मीचे शाक मैदाकी पूरी पीकेमें चनाकी  
 गुंझिया कचौरी लोक्या दही फड फडोया चणा चणाकी दार सेव  
 चालनौ सब तरहकी लोन मिरच वरा कदली फलादिक उत्स-  
 वको सधाना होला एक शाक भुजना रायता

दूधकी हांडी पैडा वासोंधी (दूध पूरी) मलाई केसरीया बरगी  
 मेवा मिठईकी धार माखन मिश्री मीचे दही सेवती माधुरी  
 गुलाबको सीरा गुलाब कतली

चमचा धरे तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ समय होइ भोग सरे  
 आचमन मुखवरन वीडा २५ गादीके आस पास धरे दहीनखुले  
 वीडी आरोगे खेल होय श्रीवक्रजीकुं बालकृष्णजीकुं मदन मोह-  
 न जीकुं श्रीमहाशुभजीकुं नौ नौके आठुं चंदुवाकुं फुलवनकुं खेल हो-  
 इ चुके गुलाल अवीरके देकरा उडे थारी भी आरती सोनेके दी-  
 वलाकी होइ नौछावर उपरना रूपैया होय सब स्वरूप मंदिरमें  
 पधारें माला बगीचाकी वडी होइ दूसरी माला पहरे गेंद छडी  
 बगीचा हूमें रहें मंदिरमें हू रहें खेल होइ चुके गुलाल उड  
 चुके आरती होइ राई लोन उतरे खेलको साज नित्यको क्ले-  
 रीनमें वगीचाकुं कुंज एकादशीकुं होरीकुं अधरीमें कवेरीनमें  
 गुलाल अवीर चंदन चोवा कचौरीमें सासाके अवीर अने सर होय  
 बगीचाके दिन मंगल भोगसुं आरवे दिनमें कदली गुंजाको बडे बा-  
 ल भोग आरोगे सांसुं गोल पाय वरन जैसी बांधे

॥ फागुन सुद १० ॥

आज सुं नगार खाना बेटे जैल ताई बजे आज सुं जैलके शृ-

गार होय दिन घटे तो नौमीसुं होय दसमीकुं शृंगार वस्त्र श्वेत  
जोरिआके किनारीकी जोडी छज्जेदार चीरा लूमकी कलंगी लाल मी-  
नाकी जोडी श्रीकंठमें कंबी दुगदुगौ गोपालवल्लभमें सेवके लडुवा

॥ फागुन सुद ११ ॥

कुंज एकादशीकुं वस्त्र केसरी जोरिआके श्वेत मीनाको मुकुट श्वेत  
मीनाकी जोडी बडे फाइन गादीपै शृंगार मध्य ताई मकराकृत कुं-  
जल कुंज एकादशीसु गुलाबकी सौरा आरोगे गोपीवल्लभमें राजभो-  
गमें अक्षय तृतीया ताई

गोपीवल्लभमें भातकी धार छडीयलदार पकोडीकी कडी गोपालव-  
ल्लभमें केशरीया घेवर आरोगे राजभोग सरें फूलको मुकुट धरें  
येपी मीनाकी रही आवे सांझकुं केसरी गोल पाग लूम तुरी खेलके  
समयकेशरी बरपी भोग आवें खेल होइ केला पल्लव सुद्धां कु. खेलको  
साज श्यामंदिरमें क्येराचमें धरें आरती भये पीछें नोछवर राई  
लोन होय.

॥ फागुन सुद १२ ॥

कुं केसरकी खाली वूदीके वस्त्र पिरोजाकी जोडी छज्जेदार पाग वं-  
द्रिका सादा शृंगार हलको गोपालवल्लभमें मेवायी.

॥ फागुन सुद १३ ॥

एक दिना गुलाबी छीलके वस्त्र हरे मीनाकी जोडी गोल पाग क-  
तरा सादा शृंगार हलको गोपालवल्लभमें मनो हरके लडुवा.

॥ फागुन सुद १४ ॥

के दिन खाली होय तो लाल रिडकीकी पाग भांतिवार किनारीके  
श्याम मीनाकी जोडी जमावकी कलंगी शृंगार हलको गोपालवल्लभ-  
में वूदीके लडुवा.

॥ फागुन सुदी १५ ॥

होली के दिन अभ्यंग जवरना सहित होइ वस्त्र श्वेत नीवने व-

हरकी खिडकी की पाग चंद्रिका सादा जोड़ी शृंगार बडे फांदना वसंत तद्वत्

मंगल भोग सुं लेके आरवे दिनमें सेवके लडुवाको बडे बाल भोग आरोगे.

गोपीवल्लभमें आरवो पाटिया मीगे शाक उत्सवको सधाना पलना में बदाम मिश्रीकी डेली सेव

राज भोगमें मीगे शाक छडियल दार तीन कडा कचरीयाकी थारी हांडी मल्ला दूधके गोपालवल्लभमें पवाकी धार घृत वृराकी कचरी उत्सवको सधाना खीर दूनी कडाकी छाछकी चपटिया

उत्थापनमें बदाम मिश्रीकी डेली सेव चालनी सक्तरहकी सांझकुं शृंगार बडे भये पीछे लूम तुरी धरे श्रीकंठमें सोनेके ताइतकी हमेल धरे शयन समे माला पहरे दरीन खुले गुलाल उडे आरती होय नौछाकर.

एकमको दिन खाली होइ तो श्वेत वस्त्र जरीकी खिडकीकी पाग लूम तुरी सुनहरी लूमकी कलंगी जोड़ी हरी वा लाल शृंगार हलको तू आरके दार पागोडीकी कडी गोपालवल्लभमें दहीकी सेवके लडुवा आरोगे.

॥ चैत्र वद १ ॥

डोलकुं अभ्यंग होइ वस्त्र श्वेत दुदामी वृंके छप्पेदार पाग चंद्रिका सादा जोड़ी फांदना शृंगार वसंत तद्वत्

गोपीवल्लभमें आरवो पाटिया मीगे शाक उत्सवको सधाना

राज भोगमें हांडी नहीं नित्यको दूधको कचरा गोपालवल्लभमें धासके लडुवा

और सखी अनासख डीमें होरी तद्वत् नित्यतामें वैर मवडी

दसमीसुं डोल तांडी शृंगार गोपालवल्लभ लिखे तामें गोपालवल्लभको क्रम येही

शृंगारको क्रम आगे पीछे होइ जाय है दसमीके शृंगारको ११ कुंजके शृंगारको होरीको डोलको तीनो दिन शृंगार होइ गुलाली छीं.

टाके वस्त्र हरी जोड़ी गोल पाग केरारकी बूंदीके वस्त्र पिरोजाकी जोड़ी छज्जे दार पाग शृंगार येही होय तिथिको नियम नहीं.

श्रीनवनीत प्रियाजी श्रीनाथजीके यहां डोल झुलें तासुं डोलके आगले दिना गुलाल निकसे जरीकी पिछ वाइ बंधे डोलके दिना निजमंदिरमें सिंहासनपै तक्रिया पाट चौकीकी खाली टाट बंदीके सानेके बौगान केच चौपड जडाऊ.

डोलके दिना श्रीमहाप्रभुजीके अभ्यंग उवटना सहित होय श्रीगुरजीके उवटना डोलके दिना नहीं और ठिकाने द्वितीया पाटके अभ्यंग होइ किउनेक ठिकाने होरीके द्वितीया पाटके श्रीमहाप्रभुजीके अभ्यंग होइ

राज भोगमें आरती होइ चुके डोलको अधिवासन होइ विष्णु विष्णु रित्यादि उत्तरायणे वसंत ऋतौ वैश्र मासे प्रतिपदि शुभतिथौ शुभ नक्षत्रे शुभ योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभतिथौ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य डोलाधिवासनमहं करिष्ये.

झालर घंघ शंखनाद होय डोलमें टाकुरजी विराजे पीतांबर उद्या किंचित् खिलके श्रीअंगपर गादी पे डोलकी झालरपै झारी १ श्रीजमुनाजलके भर पडगीन पे भोग आवे दूधे बूंदी शकरपार गुंझा कूरके मट्टी सेवके लडुवा बूंदीके लडुवा मनोहरके लडुवा फेनी श्वेत केसरी दोऊ वावर श्वेतकेसरी दोऊ मेगादी शिरवरनकडी बीजके लडुवा रसरवारा वडाकी छाछकी चपटीया कांजीकी चपटिया उत्सवको सधाना पेज केसरी तथा श्वेत वरपी केसरी तथा श्वेत गुंझिया केसरी तथा श्वेत कांसोदी केसरी तथा श्वेत मलाई मीये दही खोंकयो दही हांडी मलुडा दूधके कदली फलादिक लोन मिरच वरा नित्यके सधाना होय चालनी सब तरहकी दूध पूरी पहले भोगमें सामग्रीके चार चार लग आवें एक मलुडा दूधके एक मलुडा वडाकी छाछको एक कांजीको एक कुंडेली उत्सवके सधानाकी एक नित्यके सधानाकी कदली फलादिक लोन मिरच रा शिरवरन कडी छोटे वासनमें दूध घरकी सामग्रीके बीजके लडु-

के दोड़ दोड़ नग गुंझियानकी एक एक कुंडेली कसोंदीकी एक एक कुंडेली तुलसी शंखोदक धूपदीप होला भोग आवे.

समय होय भोग सरें आचमन मुखवल्ल वीडा ४ धरें माला पहरावे दरसन खुलें वीडा २ वीडा २ अरोगे खेल होइ अवीर गुलाल उड चुके आरती थारीकी सोनेके दीपलाकी होइ फूल उडें टेरा खेचें झा री १ श्रीजमुनाजलकी भरे

दूसरे भोग आवे सामग्री सब पहले भोगते दनी एक एक मल जा दूधको कांजीका वडाकी छछको तुलसी शंखोदक धूपदीप सधानानकी कुंडेली होला समय होय भोग सरें आचमन मुखवल्ल वीडा ८ धरें माला पहरावे दरसन खुलें वीडा ४ अरोगे खेल होइ गुलाल अवीर उड चुके फूल उडें आरती होइ टेरा खेचें

छेलो भोग आवे कांजीकी चपलीया वडाकी छछकी चपलीया हांडी दूधकी सब सामग्रीके टोकरा एक कुंडा उत्सवके सधानाको एक एक कुंडा नित्यके सधानाको होला तुलसी शंखोदक धूपदीप समय होय भोग सरें आचमन मुखवल्ल वीडा ३८ की सिंकोली धरें माला पहरावे दरसन खुलें वीडा ६ अरोगे खेल होइ

अवीर गुलाल उडें फूल उडें आरती होय पटका नोछावर करके भीवरियानकुं कीर्तनिथानकुं खिलावे परिक्रमा देइ राईलोन होइ जोहमेसुं श्रीयकुरजीकुं श्रीवालकृष्णजीकुं श्रीमदनमोहनजीकुं श्रीमहाप्रभुजीकुं पधरायके चौकी पै गादी सुद्धां पधरावे अंगवल्ल करने आलो सूको हीराकी गादीपै विराजे दोहरा लालसू लख वागा पहरावे पुरातनप्रागश्रीमस्तक पै धरें लालफरुख

शाही जरीकी शालरकी ओदनी ओदें तिलक करे श्रीकठमें मोतीकी लड वेग होइ तो अनोसर होइ शीतल भोग धरें झा भरें अनोसरको साज पहले धरयो रहै शीतल भोग सरें आचमन मुखवल्ल पैडा लगे ताला मंगल होय अवेर होय तो अनोसर नहीं होय शीतल भोग उत्थापन भोग सांगको रस सं-

Core Mota Mandir - Pracheen Kram  
www.vallabhacharya-sgrahara.org  
www.vallabhacharyakrupa.org  
(Pushchimargiya Research Portal)  
Dhruv Taji Maharaj Ki Pustak  
Sanskrit  
Shri Gurdiksha Gokulnath ji  
Mota Mandir

ध्या भोग भेलो धरकें झारी भरें २ श्रीगुरजीकी १ श्री बालकृष्ण  
 जीकी १ श्रीमहाप्रभुजीकी भोग आब चुकें शय्याकी सेवा करें।  
 समय होय भोग सरें आनमन मुखवरन वीड ६ धरें आधे दरसन  
 होइ चुकें पाट सरकावें चोकी खंडसुं लगावें संध्यो आरती धारीकी  
 सोनेके दीवलीकी होय गवाह होय बचन होय डबारा सरें शयन  
 भोग आरोगे छडीयल दार वडाकी छडल सुताकूको वाक और सब  
 नित्यवत् [www.vallabhacharyakrupa.org](http://www.vallabhacharyakrupa.org)

॥ चैत्र वद २ ॥  
 (Pushtimargiya Research Portal)

द्वितीया पाठकूं अभ्यंग होइ उवटना नहीं नित्य नेगमें गोपाल  
 वल्ल भमें खिचडीके नग आरोगे कांजीकी चपटीया द्वितीया पाठकूं  
 शय्यापैसु पलनापरसुं एक सुपेती उवय लेई दोइ सुपेती रहें  
 भांतिवार वंग विछै तवसुं छींटकी सुपेती सुजनी विछै शीतल  
 ताई होय तो कसूमल दोहरो वागा धरें वा इकहरो धरें श्रीम-  
 स्तकपै हीराकी कुलह कामको जोड जोडी हीराकी शृंगार दुहरो  
 रूप चौदसवत् हीराके कुंडल चोरी धरें

गोपीवल्ल भमें छडियल दार पकोडीकी कबी राजभोगमें गुडकी क-  
 वेरी आदा पाचरी बंद दारमें वंगन तथा कोलाके शाकमें आदा पध-  
 रावनो बंद सांठको रस बंद गुलाबकी मंडली होइ साज टाटबंदी-  
 को चौपड वेत्र गेंद चौगान कुंजा वंग आवखोरा रूपचौदसवत् पिठ  
 वाई जरीकी चंदोवा किमखापको झालरको शीतल ताई होइ तो ज-  
 रीके वस्त्र मावस ताई धरें

॥ चैत्र शुद १ ॥

संवत्सरको उत्सव - वस्त्रखाल छपाके श्रीमस्तकपै कुलह चंद्रि-  
 काको जोड सादा जोडी हीराकी आभरण शृंगार दोहरो रूप चौदसवत्  
 कुलह पर पान तुरी टीका हीराके कुंडल चोरी धरें गोपीवल्ल भमें छ-  
 डियल दार पकोडीकी कबी मीये शाक

राज भोगमें आधो पाटिया वडीको १ शाक मीये शाक हांडी मुखडा दू  
 धके गोपाल वल्ल भमें मनोहरके लडुवा मंडली दोहरो साधवानकी